Role of Bahujan Samaj Party in Haryana Lok Sabha Elections A Comparative Study

Dr. Reena Assistant Professor Department of Political Science, Vaish Mahavidyalaya, Bhiwani, Haryana 127021

सारांश: भारत ने ब्रिटिश राज्य की 200 वर्षों की गुलामी की जंजीरों को उतारकर 15 अगस्त 1947 को आजादी प्राप्त की तथा 26 जनवरी 1950 को भारत का अपना संविधान लागू हुआ जिसके अंतर्गत भारत में संपूर्ण प्रभुसत्ता संपन्न, समाजवादी .धर्मनिरपेक्ष, लोकतांत्रिक .गणराज्य की स्थापना की गई। भारत विश्व का सबसे बडा प्रजातांत्रिक देश है। भारत में जब चुनाव होता है उस समय संपूर्ण विश्व की नजरें भारत पर ही टिकी होती हैं। लोकतांत्रिक शासन प्रणाली मुख्यतः दो सिद्धांतों पर आधारित होती है प्रथम प्रभुसत्ता संपूर्ण रूप से जनता के पास होती है द्वितीय लोगों के शासन से अभिप्राय बहुमत का शासन होता है। इन दोनों सिद्धांतों के पीछे ही लोकतंत्र के लिए राजनीतिक दलों की आवश्यकता छुपी हुई है। राजनीतिक दलों के द्वारा ही जनता अप्रत्यक्ष रूप से शासन प्रक्रिया में भाग लेती है और सत्ता के निर्माण के द्वारा जनकल्याण की नीतियों में अपनी सहभागिता अप्रत्यक्ष रूप से निभाती है। यदि यह कहा जाए कि राजनीतिक दल के बिना सच्चे लोकतंत्र की स्थापना संभव <mark>नहीं</mark> है तो इसमें कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी । लोकतंत्र का प्रारंभिक आधार ही राजनीतिक दलों का अस्तित्व है। प्रजातंत्र को सफलतापूर्वक चलाने के लिए राष्ट्रीय जीवन से संबंधित भिन्न-भिन्न नीतियों का निर्माण करने में जैसे सामाजिक नीति. अर्थव्यवस्था से संबंधित नीति. औद्योगिक नीति ,विदेश नीति आदि का निर्माण करती है व चुना<mark>व लडती है , चुनाव</mark> जीत कर सरकार का निर्माण करती है। जो दल सत्ता में नहीं होते, वह विपक्षी दल की भूमिका निभाते हैं। प्रजातंत्र की सफलता के लिए एक शक्तिशाली विपक्षी दल का भी अपना बहुत अधिक महत्व होता है क्योंकि यह शासक दल को स्वेच्छाचारी बनने से रोकता है। राजनीतिक दलों के द्वारा दल के सदस्यों और विधायकों में अनुशासन बनाकर रखा जाता है ।राजनीतिक दलों के द्वारा ही आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक समस्याओं को जनता के सामने प्रकट किया जाता है और लोगों को राजनीतिक शिक्षा प्रदान की जाती है। राजनीतिक दल ही जनसाधारण और सत्ता में संपर्क स्थापित करने का काम करते हैं। राजनीतिक दल सरकार के द्वारा निर्मित कानुनों को साधारण जनता तक तथा उन कानुनों के प्रति जनसाधारण की प्रतिक्रिया को सरकार तक पहुंचाते हैं। इस प्रकार राजनीतिक दल ना केवल जनमत का निर्माण करते हैं अपित् देश की उन्नति और विकास में अपनी भिमका सनिश्चित करते हैं।

कार्ल फ्रेडिरक ने राजनीतिक दलों की पिरभाषा देते हुए लिखा कि" एक राजनीतिक दल वह समूह है जो किसी सरकार, राज्य व देश के सफल नियंत्रण में सहायक होता है जिस का विरोध किया जा सकता है उदाहरण के लिए **चर्च पार्टी**" आरएम मैकाईवर ने अपनी रचना **द मॉडर्न स्टेट**" में राजनीतिक दलों की पिरभाषा देते हुए लिखा है कि राजनीतिक दल एक संगठित संगठन है इसमें कुछ सिद्धांतों एवं नीतियों का समर्थन किया जाता है जिसका संवैधानिक अर्थ है **क्सरकार का निर्धारण करने में मदद करना**"

सांकेतिकशब्द- बहुमत का शासन, लोकतांत्रिक शासन, सामाजिक नीति, राजनीतिक दल।

भूमिका- विश्व में प्रत्येक राज्य की अपनी दलीय व्यवस्था प्रणाली होती है और दलीय व्यवस्था के अनुरूप ही राजनीतिक दलों का निर्माण होता है। भारत में राजनीतिक दलों का विकास उस तरीके से नहीं हुआ जिस प्रकार

इंग्लैंड अमेरिका व अन्य पश्चिमी देशों में हुआ है। भारत में राजनीतिक दलों का जन्म किसी कुलीन तांत्रिक सत्तारूढ़ वर्ग को अपदस्थ करने के लिए नहीं हुआ अपितु उसका उद्देश्य विदेशी साम्राज्यवादी दलों के साथ-साथ भारतीय समाज में उन तत्वों को समाप्त करना था जो सामाजिक प्रगति में रोड़ा अटकाते थे।

भारतीय दलीय प्रणाली के इतिहास में स्वतंत्रता पश्चात 1952 में जो चुनाव हुआ उस समय भारत में 14 राष्ट्रीय दल, लगभग 50 राज्य स्तरीय राजनीतिक दल थे। 1957 के चुनाव के बाद कुल मतों के 3% मत के साथ राजनीतिक दलों कांग्रेस दल, समाजवादी दल ,साम्यवादी दल और जनसंघ को अखिल भारतीय राजनीतिक दलों के रूप में मान्यता प्राप्त हुई। 1984 में चुनाव आयोग ने 8 राजनीतिक दलों को राष्ट्रीय सरकार राजनीतिक दलों व 39 क्षेत्रीय स्तर के राजनीतिक दलों को मान्यता देकर आरक्षित चिन्ह आवंटित किए।

यदि कोई पंजीकृत दल निम्न शर्तों में कोई एक शर्त पूरी करता है तो उसे राष्ट्रीय स्तर की मान्यता भारतीय चुनाव आयोग देता है :

- 1. कोई पंजीकृत दल तीन विभिन्न राज्यों में लोक सभा की कुल सीटों की कम से कम 2% सीटें हासिल की हों।
- 2. कोई दल 4 अलग अलग राज्यों में लोक सभा या विधान सभा चुनाव में कम से कम 6% मत पाये हों और लोक सभा में कम से कम 4 सीटें हासिल की हों।
- 3. किसी भी दल को कम से कम चार या उससे अधिक राज्यों में राज्यीय दल की मान्यता प्राप्त हो।

राष्ट्रीय दल" के रूप में मान्यता प्राप्त दल-

भारत में बहुदलीय प्रणाली है जिसमें बहुजन समाज पार्टी देश में राष्ट्रीय राजनीतिक दल के रूप में विद्यमान है 1997 में चुनाव आयोग द्वारा राष्ट्रीय दल की मान्यता मिलने के बाद देश के अनेक भागों में बहुजन समाज पार्टी अपना प्रभाव जमा रही है पूरे देश में बसपा का जनाधार है। यही नहीं दलितों की एकमात्र प्रतिनिधि पार्टी है तथा दिलत देश के सारे भागों में फैले हुए हैं इसलिए इस पार्टी का देश की राष्ट्रीय राजनीति और हरियाणा की राजनीति में बहुत अधिक प्रभाव रहा है इस प्रकार बसपा का शोध अध्ययन हरियाणा की राजनीति के संदर्भ में अति महत्वपूर्ण है । भारतीय संविधान में राजनीतिक दलों का कोई उल्लेख नहीं किया गया है और उसमें कोई ऐसी व्यवस्था भी नहीं है जिसके माध्म से राजनीतिक भारतीय राजनीति में राजनीतिक दलों के संगठन एवं संचालन का नियमन किया जा सके। एक कथन उल्लेखनीय है कि भारत में निर्वाचन आयोग के गठन की व्यवस्था की गई है जो भारतीय राजनीतिक दलों के निर्वाचन और प्रतिनिधित्व संबंधी पक्ष का संचालन और नियमन करते हैं। हम इस बात से सहमत हैं कि राजनीतिक दल लोकतंत्र की महत्वपूर्ण विशेषता है फिर भी 150 वर्ष पहले उनका स्थान और कार्यप्रणाली अज्ञात था। पहले अमेरिका में गुटबंदी तथा दल का एक ही अर्थ लिया जाता था। इंग्लैंड में दो दल विग और टोरी का अस्तित्व था। आज गुट बंदी एवं दल का अलग-अलग अर्थों में प्रयोग किया जाता है।

बहुजन समाज पार्टी का उद्भव:

बहुजन समाज पार्टी अस्तित्व में कैसे आई यह प्रश्न भी कम रोचक नहीं है। इस पार्टी के गठन का श्रेय यदि किसी एक महान व्यक्ति को जाता है तो वह काशीराम है। नई दिल्ली के हरिजन बहुल इलाके करोल बाग के एक छोटे से फ्लैट में अपना दफ्तर जमाए 54 वर्षीय काशीराम बैकवर्ड एंड माइनॉरिटी कम्युनिटी एंप्लोइज फेडरेशन(BAMCEF), बुद्धिस्ट रिसर्च सेंटर (B.R.C),दिलत शोषित समाज संघर्ष समिति (D.S-4) तथा बहुजन समाज पार्टी (B.S.P) नामक चार संगठनों का नियंत्रण एवं संचालन करते थे।

काशीराम मूलतः रोपड़ पंजाब के खवासपुर गांव के रहने वाले थे, रामदासिया हरिजन परिवार में पैदा हुए। काशीराम का बचपन अपने पैतृक गांव में ही बीता और वहीं पर उनकी प्रारंभिक शिक्षा हुई। उन्होंने 1956 में विज्ञान से स्नातक शिक्षा ग्रहण की। 1957 में सर्वे ऑफ इंडिया की प्रतियोगिता परीक्षा में बैठे और सफल हुए बांड ना भरने के कारण उन्होंने यह नौकरी छोड़ दी और पुणे के एक्सप्लोसिव रिसर्च एंड डेवलपमेंट लैबोरेटरी (E.R.D.L) में अनुसंधान सहायक की नौकरी कर ली। पुणे में आने के बाद धीरे-धीरे काशीराम का झुकाव राजनीतिक एवं सामाजिक गतिविधियों की ओर हुआ। इसी दौरान एक घटना हुई।E.R.D.L में बुध जयंती व अंबेडकर जयंती की छुट्टियों को काटकर दीपावली व तिलक जयंती की छुट्टियों की घोषणा कर दी। राजस्थान के अनुसूचित जाति के एक कर्मचारी ने जब इस निर्णय का विरोध किया तो उसे निलंबित कर दिया गया। अपने सहयोगियों के मना करने के बावजूद काशीराम ने उस निलंबित कर्मचारी की मदद की तथा मामले को न्यायालय तक ले गए। बाद में न्यायालय ने उस कर्मचारी का निलंबन रद्द कर दिया और अंबेडकर व बुद्ध जयंती दोनों की छुट्टियां बहाल कर दी। इस समय तक काशीराम अंबेडकर वादियों के प्रभाव में आ चुके थे और डॉक्टर अंबेडकर की पुस्तकों का अध्ययन कर लिया था। काशीराम के अनुसार उन्हें लगा कि जातिवादी सामाजिक व्यवस्था ही सारी बुराइयों की जड़ है। अंततः 1964 में उन्होंने नौकरी छोड़ दी।

नौकरी से त्यागपत्र देने के बाद कांशीराम ने महाराष्ट्र रिपब्लिक पार्टी तथा डॉक्टर अंबेडकर द्वारा स्थापित "पीपुल्स एजुकेशन सोसाइटी" के लिए काम करना शुरू कर दिया। लेकिन धीरे-धीरे 1966 से लेकर 1978 तक पार्टी के विघटन का सिलसिला जारी रहा। एक नया संगठन बनाने की दिशा में कांशीराम ने अनुसूचित जाति/ जनजाति के अतिरिक्त अन्य पिछड़ी जातियों व अल्पसंख्यक वर्ग के कर्मचारियों को लेकर(BAMCEF) बैकवर्ड एंड माइनॉरिटी कम्युनिटीज फेडरेशन की स्थापना की। 6 दिसंबर 1976 को कांशीराम ने बामसेफ दिलत शोषित समाज का राजनीतिक आधार मजबूत किया। असमान सामाजिक व्यवस्था के खिलाफ संघर्ष करने के लिए तथा जाति विहीन व बराबरी वाले समाज की स्थापना के लिए काशीराम ने 1981 में "दिलत शोषित समाज संघर्ष समिति" (D.S.-4) बनाई। यही नहीं बल्कि अंबेडकर की "बुद्धिस्ट सोसाइटी ऑफ इंडिया" के भी समानांतर कांशीराम ने "बुद्धिस्ट रिसर्च सेंटर" नामक संगठन भी बनाया। इसी बीच उन्होंने 1981 के बाद "बहुजन संगठन" नामक एक पत्रिका निकाली तो दूसरी ओर अंग्रेजी पत्रिका "आपेरेस्ट इंडिया" भी निकाली, जिसे उन्होंने पार्टी का मुख्य पात्र बनाया। इसी समय 14 अप्रैल 1984 को उन्होंने बहुजन समाज पार्टी बनाई। डी.एस-4 का बहुजन समाज पार्टी में विलय कर दिया।काशीराम कहते हैं 1973 में बामसेफ नाम का जो राजनीतिक वट वृक्ष उन्होंने लगाया था उसकी शाखाएं बहुजन समाज पार्टी के रूप में घनी होने लगी।

बहुजन की अवधारणाः

बहुजन शब्द का सबसे पहले प्रयोग 19वीं शताब्दी में महाराष्ट्र में "सत्यशोधक समाज" के संस्थापक ज्योतिबा फुले ने मूल रूप से निम्न एवं पिछड़ी जातियों के छात्ते के रूप में किया। काशीराम के विचार में बहुजन शब्द का पार्टी शिर्षक के रूप में प्रयोग करने का अभिप्राय," आगे ना बड़ी हुई जातियों की एकता के रूप में आरंभ करना था।" आरंभ में उन्होंने निम्न जातियों को जागृत किया और बाद में उन्हें दिलत शब्द से संबोधित किया। बहुजन शब्द किसी जाति विशेष का नहीं है। यह शब्द गौतम बुद्ध के विचारों से लिया गया है। उन्होंने "बहुजन हिताय, बहुजन सुखाय" का नारा दिया था। बहुजन शब्द भी बहुजन की अवधारणा से एक सूत्र मूल रूप से संबंधित प्रश्न है कि यह सामाजिक स्तर पर स्थापित हो रहा है। बहुजन दो शब्दों बहु और जन से बना हुआ है। बहु का अर्थ है बहुत बड़ी तादाद जन का अर्थ है जनसंख्या या आबादी वाला।

<u>बहुजन समाज पार्टी क्या है?</u> –

भारत में स्थापित राष्ट्रीय स्तर की पार्टियां मनु वादियों के हाथों में है जिन्हें वे अपने हितों में चलाते हैं।इनमें दिलत शोषित समाज को तो वैसे ही पीछे लगाया जाता है। ऐसा सोचा गया है कि बहुजन समाज को अपनी पार्टी बनानी चाहिए तािक वे अपने कल्याण के लिए स्वयं कार्य कर सके व किसी पर निर्भर ना रहे, इसीिलए 14 अप्रैल 1984 को दिल्ली में बहुजन समाज पार्टी बनाई गई इसके बाद 22 23 व 24 जून को पार्टी का पहला राष्ट्रीय सम्मेलन लाल किले के सामने वाले मैदान में हुआ।

बहुजन समाज पार्टी बनाने वाले लोग कौन हैं ?

बहुजन समाज अनुसूचित जाति /जनजाति , अन्य पिछडे वर्ग व अल्पसंख्यक समुदाय के लोगों से बना है। अन्य पार्टियों की तुलना में बसपा इसलिए अलग है क्योंकि यह राजनीतिक कम सामाजिक अधिक है। यदि यह कहा जाए कि यह पार्टी " एवं सामाजिक संगठन का मिश्रण है" तो यह पूर्णतः सटीक होगा। काशीराम समझते हैं कि बसपा की जरूरत दबे कुचले समाज के लोगों की ऐतिहासिक जरूरत है। आज बहुजन समाज का पहला अंग सबसे अधिक दबा कुचला अंग है जिसे हम अनुसूचित जाति/जनजाति या बहुत से क्षेत्रों में हरिजन या आदिवासी भी कहते हैं।बहजन समाज के दूसरे अंग अन्य पिछंडे वर्गों के लिए इस पार्टी की जरूरत ज्यादा है। सच तो यह है कि देश की सरकार इन लोगों को मान्यता देने के लिए तैयार नहीं है जब इन्हें मान्यता नहीं मिली तो अधिकार मिलने का तो सवाल ही पैदा नहीं होता। धार्मिक अल्पसंख्यक लोगों के लिए पार्टी की सख्त जरूरत है क्योंकि इनकी समस्याएं दिन प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। अनुसूचित जाति/जनजाति व अन्य पिछड़े वर्ग कड़ी मेहनत करके अपनी आर्थिक हालत सुधारते या जो भी थोड़ा रंग उन^{े पर} चढ़ता व<mark>ह दंगों के माध्यम</mark> से उतार दिया जाता। देश की एक चौथाई जनसंख्या दलित होने के कारण देश में राष्ट्रीय पार्टी के नेतृत्व के लिए राजनीतिक स्थान उपलब्ध था। यह केवल तभी हो सकता था जब कोई राजनीतिक दल राष्ट्रीय स्तर पर द<mark>लितों का</mark> नेतृत्व करें। 1942 में **शेड्यूल कास्ट फेडरेशन,** 1957 में रिपब्लिक पार्टी ऑफ इंडिया, 1970 में दिलत पैंथर पार्टी विभिन्न राजनीतिक दल दिलतों के नेतत्व एवं प्रभत्व में उभरे। उन्होंने दलितों को उठाया और उनमें राज्य शक्ति की प्राप्ति का बीज बोया लेकिन वे अपनी अंतिम मंजिल तक नहीं पहुंच सके। परंतु 14 अप्रैल 1984 को बहुजन स<mark>माज पार्टी का</mark> उदय हुआ जिसने दलितों के लिए एजेंडा बनाया। थोड़े समय के पश्चात 1996 में बहजन समाज पार्टी दलितों की राष्ट्रीय पार्टी बनी और लोकसभा चनाव 1999 में इसने देश में कुल मतों के 4.16% मत प्राप्त करके कांग्रेस और बीजेपी के बाद तीसरी स्थिति प्राप्त कर ली।

भारत में बहुजन समाज में जन्मे महात्मा ज्योतिबा फुले.नारायण गुरु , छत्रपति शाहुजी महाराज, पेरियार रामास्वामी, बाबा साहब अंबेडकर और मान्यवर कांशीराम जी की सोच के मुताबिक केंद्र और राज्य में ऐसी सरकार बनाना चाहते जिसमें समाज के सभी वर्गों को जिंदगी के हर पहलू में बिना किसी भेदभाव के आगे बढ़ने का मौका मिले और मनुवादी पार्टियों की सरकारों की तरह किसी भी वर्ग की उपेक्षा ना हो अर्थात सभी को आगे बढ़ने के समान अवसर मिले और जिनको ज्यादा जरूरत है उन्हें प्राथमिकता के आधार पर अवसर मिलना चाहिए। यही इन महापुरुषों का खास सपना रहा है इसे पुरा करने के लिए पार्टी वचनबद्ध है । 14 अप्रैल 1984 को भारतीय राजनीति में एक नए दल का उदय हुआ जिसे बहुजन समाज पार्टी कहा जाता है 1989 में लोकसभा के चुनाव एवं यूपी विधानसभा की चुनाव उपलब्धियों के आधार पर चुनाव आयोग ने इस दल को क्षेत्रीय दल के रूप में मान्यता प्रदान की तथा 1996 के लोकसभा चुनाव में प्राप्त वोटो एवं स्थानों के आधार पर चुनाव आयोग ने इस दल को राष्ट्रीय राजनीतिक दल के रूप में मान्यता प्रदान की ।पार्टी की स्थापना के 20 वर्षों के पश्चात अर्थात चौदहवी लोकसभा चुनाव 2004 में पार्टी ने अपना चुनाव घोषणा पत्र जारी करते हुए कुमारी मायावती ने कहा कि हम कथनी नहीं करनी में यकीन करते हैं इसीलिए आज तक पार्टी ने चुनाव घोषणा पत्र जारी नहीं किया था। मगर कुछ लोग हमारे कार्यकर्ताओं को गुमराह करते हैं इसलिए पहली बार चुनाव घोषणापत्र जारी किया गया है। यह मनुवादी पार्टियों की तरह हर चुनाव में बदलेगा नहीं उन्होंने कहा कि उनके नेतृत्व में उत्तर प्रदेश में बनी सरकारों ने जो कृतियां हासिल की है उन्हीं को बहुजन समाज पार्टी केंद्र व राज्यों में लागू करना चाहती है। बहुजन समाज पार्टी की तरह उसका घोषणा पत्र भी कई मायनों में अनोखा है। बाकी पार्टियों के घोषणा पत्र की तरह बहुजन समाज पार्टी के घोषणा पत्र में बड़े मतदाताओं को बड़े

सब्जबाग नहीं दिखाए गए, ना ही वादों की बारिश की गई बिल्क पूरे घोषणापत्र में एक वादा जरूर है और वह है अरक्षण। जहां आरक्षण नहीं है वहां आरक्षण देने पर आरक्षण के अधूरे पड़े कोटे को जल्द पूरा करने का। बहुजन समाज पार्टी यह वादा करती है कि जब पार्टी के हाथों में केंद्र और राज्य की सत्ता आएगी तो फिर विशेष अभियान चलाकर आरक्षण के अधूरे कोटे को बहुत जल्द पूरा किया जाएगा। साथ ही जिन क्षेत्रों में आरक्षण की व्यवस्था नहीं है वहां भी आरक्षण का प्रबंध किया जाएगा अर्थात न्यायपालिका, राज्यसभा, विधानसभा, मंत्रिपरिषद, निजी क्षेत्र में भी आरक्षण लागू किया जाएगा।

बहुजन समाज पार्टी का लक्ष्यः

देश में सामाजिक एवं आर्थिक परिवर्तन लाना अर्थात गैर बराबरी को दूर करना बहुजन समाज पार्टी का मुख्य लक्ष्य है जिसे राजनीतिक सत्ता की मास्टर चाबी को हासिल किए बिना प्राप्त नहीं किया जा सकता है। पार्टी के इस लक्ष्य के बारे में अक्सर मनुवादी पार्टियां चुप रहती है क्योंकि उन्हें यह एहसास हो चुका है कि ऐसा हो जाने से सत्ता बहुजन समाज के हाथों में आ जाएगी इसलिए मनुवादी पार्टियां बहुजन समाज को न्याय देने, समानता ,समरसता लाने की सिर्फ बात करती हैं। लेकिन इस बारे में बहुजन समाज पार्टी का मानना है कि यह सब सामाजिक परिवर्तन के बिना संभव नहीं हो सकता है और सामाजिक परिवर्तन लाए बिना समाज में आर्थिक परिवर्तन अर्थात गैर बराबरी को दूर नहीं किया जा सकता है। बहुजन समाज पार्टी का लक्ष्य दिलतों को ऊंचा उठाने एवं स्वाभिमान की धारणा पर आधारित है। इसका नेतृत्व इस तर्क पर बल देता है कि भौतिक लाभ की अपेक्षा आत्मसम्मान दिलतों के लिए ज्यादा महत्वपूर्ण है।

चुनाव चिन्ह- बहुजन समाज पार्टी की पहचान:

नीला झंडा हाथी निशान।

इस नारे का अभिप्राय है कि हाथी बहुजन समाज पार्टी का चुनाव चिन्ह है जो की विशाल आबादी का प्रतीक है। नीला झंडा आसमान का प्रतीक है जो हमें एहसास कराता है कि आसमान में किसी प्रकार का छुआछूत,ऊंच-नीच, अमीरी-गरीबी पर अन्य प्रकार की असमानता नहीं है, केवल शांति है। परंतु धरती पर ऐसा नहीं है इसलिए बहुजन समाज पार्टी आसमान की तरह धरती पर भी समानता एवं शांति वाला वातावरण देखना चाहती है।सामाजिक और आर्थिक बराबरी लाना चाहती है जो देश व सर्व समाज के हित में हो यही सोचकर बहुजन समाज पार्टी ने अपना चुनाव चिन्ह हाथी झंडे का रंग नीला रखा।

आरंभ से 1998 तक बसपा की हरियाणा में भूमिका:

काशीराम ने 14 अप्रैल 1984 को बहुजन समाज पार्टी का गठन किया था ।दिसंबर 1984 में आठवीं लोकसभा के चुनाव हुए थे काशीराम ने हरियाणा में पार्टी के प्रचार व प्रसार के लिए 2 प्रत्याशी खड़े किए। इस समय पार्टी को क्षेत्रीय दल या राष्ट्रीय दल के रूप में कोई मान्यता नहीं मिली थी इसलिए पार्टी को यह चुनाव हरियाणा में निर्दलीय के रूप में लड़ना पड़ा। पार्टी ने अंबाला सुरक्षित सीट से बहुजन समाज पार्टी के स्थानीय संघर्षशील नेता श्री अमन कुमार नागरा को अपना प्रत्याशी बनाया। अमन कुमार नागर ने निर्दलीय के रूप में पार्टी की विचारधारा लक्ष्यों और उद्देश्यों का बढ़ चढ़कर प्रचार किया। अंबाला लोकसभा क्षेत्र से अमन कुमार नागरा ने 6311 मत प्राप्त किए। इन्होंने हरियाणा की राजनीति में बहुजन समाज पार्टी के उदय की शुरुआत के संकेत दिए। पार्टी ने दूसरा उम्मीदवार कुरुक्षेत्र लोकसभा क्षेत्र से खड़ा किया यहां से सुजीत कश्यप ने निर्दलीय के रूप में पार्टी की विचारधारा लक्ष्य उद्देश्यों को आम जनता से अवगत करवाया और इस चुनाव में पहली बार लगभग 4000 मत प्राप्त किए। बहुजन समाज पार्टी ने हरियाणा की राजनीति में 1985 के बाद संगठित तौर पर सक्रिय योगदान दिया। यह भी स्पष्ट है कि अब इस पार्टी में राजनीतिकरण की प्रक्रिया में अपनी जड़ें मजबूत करने की शुरुआत कर दी।

हरियाणा लोकसभा चुनाव 1989

<u>निर्वाचन</u>	उम्मीदवार	<u>मतदाताओं</u>	<u>डाले</u> गए	<u>मतदान</u>	बहुजन	बहुजन
<i>क्षेत्र</i>		की संख्या	<u>मतों की</u>	<u>प्रतिशत</u>	समाज पार्टी	<u>समाज पार्टी</u>
			<u>संख्या</u>			<u>को प्राप्त मत</u>
						<u>प्रतिशत</u>
अंबाला	अमन कुमार	8,99,299	5,81,089	64.6%	45,389	8.0%
	नागरा					
भिवानी	राजेंद्र	9,44,629	6,04,350	64.0%	14,609	2.5%
फरीदाबाद	शिवनारायण	11,31,257	7,10,487	62.8%	6,723	1.0%
हिसार	जगन्नाथ	9,12,985	5,83,150	63.9%	3,074	0.5%
करनाल	माय लाल	9,46,620	6,06,237	64.0%	7,631	1.3%
कुरुक्षेत्र	हरबंस सिंह	9,15,880	6,15,902	67.3%	8,912	1.5%
सिरसा	सुरजन राम	9,76,500	6,21,055	63.6%	8,638	1.4%
रोहतक	जिले सिंह	9,08794	6,19,262	68.1%	1,998	0.3%
सोनीपत	योगेश कुमार	9,43,188	6,15,411	65.3%	2,190	0.4%

नवंबर 1989 में हरियाणा में नौवीं लोकसभा के चुनाव में कुल 12 राजनीतिक दलों ने हिस्सा लिया तथा कुल 96,36,688 मतदाताओं के नाम मतदाता सूची में दर्ज थे जिसमें से 62,07,111 मतदाताओं ने मत दिए तथा 64.4 % मतदान हुआ। इस चुनाव में बहुजन समाज पा<mark>र्टी ने हरियाणा की</mark> 10 लोकसभा सीटों में से नो सीटों पर अपने प्रत्याशी खंडे किए। यह चनाव पार्टी ने स्वयं अपने दम पर लंडा और 1984 के मुकाबले में पार्टी का प्रभाव काफी अधिक बडा। पार्टी ने 1984 में केवल 2 प्रत्याशी खड़े किए थे जबकि 1989 में 9 स्थानों पर अपने प्रत्याशी खड़े किए। यद्यपि इस चुनाव में भी पार्टी को हरियाणा में क्षेत्रीय दल के रूप में मान्यता नहीं मिली थी इसलिए हरियाणा में पार्टी ने चुनाव निर्दलीय के रूप में ही लड़ा ।पार्टी का चुनाव चिन्ह पार्टी उम्मीदवारों को आवंटित नहीं किया गया था ।अमन कुमार नागरा ने 1989 के चुनाव में कुल 45389 मत प्राप्त किए और 1984 के मुकाबले बहुजन समाज पार्टी को एक मजबूत जनाधार प्रदान किया। भिवानी से राजेंद्र ,फरीदाबाद से शिवनारायण, हिसार से जगन्नाथ, करनाल से माई लाल .कुरुक्षेत्र से हरबंस सिंह, सिरसा से सुरजन राम, रोहतक से जिले सिंह तथा सोनीपत से योगेश कुमार को मैदान में उतारा ।इन निर्देलीय उम्मीदवारों ने पार्टी की विचारधारा उद्देश्य एवं लक्ष्य का प्रचार प्रसार किया। इन उम्मीदवारों को 99164 कुल मत प्राप्त हुए तथा कुल वैध मतों का 1.6% हासिल हुआ । पार्टी ने पहली बार 9 लोकसभा क्षेत्रों से अपनी पहचान बनाने में कामयाबी हासिल की । इस प्रकार 1984 व 1989 के चुनाव का तुलनात्मक अध्ययन करने के आधार पर पार्टी ने निर्दलीय के रूप में हरियाणा में अपने प्रभाव क्षेत्र का लगभग तीन चौथाई विस्तार किया एवं 1984 के चुनाव के मुकाबले में मत प्रतिशत में भी उछाल आया और पार्टी पूरे भारत में 2.35 % मत प्राप्त कर के देश की छठी राष्ट्रीय राजनीतिक पार्टी बन गई।

हरियाणा लोकसभा चुनाव 1991:

अप्रैल 1991 को मुख्य चुनाव आयुक्त टीएन सेशन के द्वारा 10वीं लोकसभा के चुनाव की घोषणा की गई। इस चुनाव में हिरयाणा में कुल 97,25,897 मतदाताओं का नाम मतदाता सूची में दर्ज था थे जिसमें से 64,03,796 मतदाताओं ने मत डाले और 65.8 % मतदान हुआ। इस चुनाव में कुल 16 राजनीतिक दलों ने हिस्सा लिया। चुनाव में मुख्यतः कांग्रेस, भाजपा, जनता दल, वामपंथी गठबंधन नामक चार प्रमुख राजनीतिक दल मैदान में थे इसके अतिरिक्त बहजन समाज पार्टी निर्दलीय व दूरदर्शी पार्टी के रूप में भाग ले रही थी। बहजन समाज पार्टी का नारा था

जाति पर ना पाती पर मोहर लगेगी हाथी पर।

15 का राज 85 पर नहीं चलेगा नहीं चलेगा।

जो जमीन सरकारी है, वह जमीन हमारी है।

1991 के 10 वीं लोकसभा के चुनाव में बहुजन समाज पार्टी ने हरियाणा राज्य की 10 लोकसभा सीटों में से केवल एक सीट अंबाला सुरक्षित पर पार्टी प्रदेश अध्यक्ष अमन कुमार नागरा को अपना प्रत्याशी बनाया। इस चुनाव में बहुजन समाज पार्टी ने किसी के साथ कोई गठबंधन नहीं किया अपितु अकेले अपने दम पर चुनाव लड़ा। इस बार बहुजन समाज पार्टी ने क्षेत्रीय पार्टी के रूप में हाथी चुनाव चिन्ह पर चुनाव लड़ा और अमन कुमार नागरा ने 1,11,353 वोट हासिल किए अर्थात 17.59% मत हासिल करके चौथा स्थान प्राप्त किया। बहुजन समाज पार्टी ने 1984 के मुकाबले लगभग 30 गुना, 1989 के मुकाबले 3 गुना अधिक मत प्राप्त किए। इस प्रकार कहा जा सकता है कि 1991 के चुनाव में बहुजन समाज पार्टी का प्रभाव निश्चित रूप से बड़ा है। बसपा की 10 वीं लोकसभा चुनाव में हरियाणा प्रदेश में भूमिका बहुत बढ़ गई। अब पार्टी ने राजनीतिकरण की प्रक्रिया में अपनी जड़ों को और अधिक मजबूत कर लिया।10 वीं लोकसभा चुनाव में इंडियन नेशनल कांग्रेस ने 9 स्थानों पर विजय हासिल करके 37.2% मत प्राप्त किए तथा हरियाणा विकास पार्टी ने एक स्थान पर विजय हासिल करके 5.3% मत प्राप्त किए।

हरियाणा लोकसभा चुनाव 1996:

अप्रैल-मई 1996 के आम चुनाव में हरियाणा में 26 राजनीतिक दलों ने हिस्सा लिया जिसमें कुल मतदाताओं की संख्या 1,11,52,856 थी जिसमें से 78,60,863 मतदाताओं ने वोट डाले और मतदान प्रतिशत 70.5% रहा। बहुजन समाज पार्टी ने हरियाणा की 10 सीटों में से 6 सीटों पर अपने प्रत्याशी खड़े किए। अंबाला से अमन कुमार नागरा, महेंद्रगढ़ से रघु यादव, फरीदाबाद से शिवनारायण ,करनाल से रघुवीर सिंह, कुरुक्षेत्र से सिंह राम और हिसार से सुखदेव सिंह को बहुजन समाज पार्टी ने अपना उम्मीदवार बनाया। पार्टी ने यह चुनाव अकेले अपने दम पर लड़ा उसका किसी अन्य पार्टी के साथ कोई चुनावी गठबंधन नहीं था। अंबाला लोकसभा क्षेत्र से पार्टी प्रत्याशी अमन कुमार नागरा ने अन्य क्षेत्रों की अपेक्षा सर्वाधिक 20.6% मत प्राप्त किए ,दूसरे नंबर पर महेंद्रगढ़ से रघु यादव ने 17.2% मत हासिल किए ,तीसरे नंबर पर फरीदाबाद से शिवनारायण ने 6.9% मत प्राप्त किए चौथे नंबर पर रघुवीर सिंह ने करनाल से 6.9% मत प्राप्त किए, पांचवें स्थान पर कुरुक्षेत्र से सिंह राम ने 6.6% मत प्राप्त किए तथा छठे स्थान पर हिसार से सुखदेव ने 5.0% मत प्राप्त किए।

स्थान	<u>निर्वाचन</u> <u>क्षेत्र</u>	<u>उम्मीदवार</u>	मतदाताओं की संख्या	डाले गए मतों की संख्या	<u>मतदान</u> <u>प्रतिशत</u>	बहुजन समाज पार्टी	बहुजन समाज पार्टी को प्राप्त मत प्रातिशत
3	अंबाला	अमन कुमार नागरा	10,98767	8,24,928	75.0%	1,64,288	20.6%
3	महेंद्रगढ़	रघु यादव	12,37,989	8,19,455	66.2%	1,36,475	17.2%
4	फरीदाबाद	शिवनारायण	13,94,387	8,44,984	60.6%	56,733	6.9%
4	करनाल	रघुवीर सिंह	11,49,141	8,29,916	72.2%	55,484	6.9%
4	कुरुक्षेत्र	सिह राम	11,00,534	8,29,029	75.3%	52,670	6.6%
5	हिसार	सुखदेव	10,30,467	7,46,249	72.4%	36,308	5.0%

उपरोक्त विवरण से स्पष्ट है कि 1996 के लोकसभा चुनाव में हरियाणा में बहुजन समाज पार्टी के उम्मीदवार अमन कुमार नागरा ने अंबाला में तीसरा स्थान, रघु यादव ने महेंद्रगढ़ से तीसरा स्थान, शिव नारायण ने फरीदाबाद से चौथा स्थान, रघुवीर सिंह ने करनाल में चौथा स्थान, सिंह राम ने कुरुक्षेत्र से चौथा स्थान व सुखदेव ने हिसार से पाँचवाँ स्थान प्राप्त किया। इस प्रकार हरियाणा में बहुजन समाज पार्टी का राजनीतिकरण बढ़ता चला गया ।1984 की अपेक्षा 1996 में पार्टी ने 10 सीटों में से 6 सीटों पर अपने प्रतिनिधि खड़े किए और पार्टी का जनाधार लगातार बढ़ता गया और यह संस्थागत हो गई और पार्टी को क्षेत्रीय पार्टी के रूप में भी मान्यता प्राप्त हो गई।

हरियाणा लोकसभा चुनाव 1998:

लोकसभा मध्यावधि चनाव में हरियाणा की10 लोकसभा सीटों पर बहजन समाज पार्टी ने हलोदरा पार्टी के साथ मिलकर चुनाव लड़ने का ऐलान किया ।एक संवाददाता सम्मेलन को संबोधित करते हुए बहुजन समाज पार्टी सुप्रीमो काशीराम व पूर्व मुख्यमंत्री ओम प्रकाश चौटाला ने कहा कि सीटों का तालमेल हो गया है। बहुजन समाज पार्टी अंबाला,महेंद्रगढ़, फरीदाबाद से चुनाव लडेगी और बाकी सीटों पर हलोदरा चुनाव लडेगी। श्री चौटाला ने कहा कि चौधरी देवीलाल ने संयुक्त चुनावी अभियान 15 जनवरी से रोहतक में चलाया जाएगा। चौधरी देवीलाल ने बहुजन समाज पार्टी के लिए राजस्थान, मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश और गुजरात में अभियान चलाया। बहुजन समाज पार्टी ने अंबाला से अमन कुमार नागरा .फरीदाबाद से धर्मवीर भडाना. महेंद्रगढ से अहीरवाल रघु यादव को पार्टी का प्रत्याशी बनाया जबिक हलोदरा की तरफ से रोहतक से चौधरी देवीलाल, भिवानी से अजय चौटाला, कुरूक्षेत्र से कैलाश सैनी .हिसार से स्रेंद्र बरवाला .सिरसा से सुशील इंदौरा .सोनीपत से किशन सांगवान को प्रत्याशी घोषित किया गया। हरियाणा में बहुजन समाज पार्टी के बढ़ते हुए जनाधार को देखते हुए हरियाणा के पूर्व मंत्री जगलाल चौधरी बसपा में शामिल हो गए और उन्हें पार्टी का वरिष्ठ उपाध्यक्ष बनाया गया। लोकसभा मध्य अवधि चुनाव में बहुजन समाज पार्टी की कामयाबी का दावा करते हुए अमन कुमार <mark>नागरा ने कहा कि</mark> लोग बहुजन समाज पार्टी को पसंद करने लगे हैं। बहुजन समाज पार्टी के अलावाँ दूसरी पार्टियां लोगों के बीच में जाने से डर रही है लोग अब वयवस्था में पूरी तरह बदलाव लाना चाहते हैं। बहुजन समाज पार्टी ने कांग्रेस पार्टी पर अपराधीकरण, भ्रष्टाचार के आरोप लगाते हुए भजनलाल की आलोचना करते हुए कहा कि उन्होंने दलित समाज को दो भागों में एस सी -ए व एस सी- बी में बांट कर फूट डालने की कोशिश की है लेकिन ऐसा करने करने की सजा पार्टी को पिछले चुनाव में मिल चुकी है।

हरियाणा की 10 में से 5 सीटों पर हलोदरा व बसपा कब्जा जमाने में सफल रही वहीं कांग्रेस को 3 तथा भाजपा व हविपा गठबंधन को 2 सीटें मिली। बहुजन समाज पार्टी प्रत्याशी अमन कुमार नागरा ने कुल 273772 मत प्राप्त किए यानी 36.9% मत हासिल करके पहली बार जीत का स्वाद चखा। बहुजन समाज पार्टी का हलोदरा पार्टी के साथ गठबंधन इस बात का प्रतीक था कि बसपा की अहमियत बहुत बढ़ गई है और मतदाताओं में इसकी पकड़ मजबूत हो गई है।

स्थान	<u>निर्वाचन</u> <u>क्षेत्र</u>	<u>उम्मीदवार</u>	<u>मतदाताओं</u> की संख्या	<u>डाले गए</u> <u>मतों की</u> संख्या	<u>मतदान</u> <u>प्रतिशत</u>	बहुजन <u>समाज</u> <u>पार्टी</u>	बहुजन समाज पार्टी को प्राप्त मत प्रातेशत
3	अंबाला	अमन कुमार	10,92,422	7,48,313	68.5%	2,73,792	37.0%
		नागरा					
3	महेंद्रगढ़	रघु यादव	12,25,797	8,03,923	65.6%	1,88,351	23.8%
3	फरीदाबाद	धर्मवीर	13,90,542	9,13,821	65.7%	1,18,009	13.1%
		भड़ाना					

हरियाणा 13वी लोकसभा के गठन के लिए चुनाव आयोग ने आगामी मध्यावधि चुनाव के लिए 1999 में चुनाव की घोषणा की गई जिसमें कहा गया कि संवैधानिक प्रावधान के अनुसार नई लोकसभा का गठन 21 अक्टूबर तक कर लिया जाना है जिसके अंतर्गत 11 जुलाई को घोषित चुनाव कार्यक्रम के ठीक 23 दिन बाद आयोग ने संशोधित चुनाव कार्यक्रम की घोषणा की। संशोधित चुनाव कार्यक्रम के अनुसार मतगणना 6 अक्टूबर को होगी और चुनाव प्रक्रिया 10 अक्टूबर तक संपूर्ण कर ली जाएगी। 1999 के हरियाणा लोकसभा चनाव में बहुजन समाज पार्टी ने तीन स्थानों पर चुनाव लड़ा अंबाला ,करनाल व महेंद्रगढ़ तथा उसकी सहयोगी पार्टी हरियाणा विकास पार्टी ने दो स्थानों पर फरीदाबाद व भिवानी से चुनाव लडा। कांग्रेस ने 10 स्थानों पर .भाजपा व इनेलो गठबंधन ने पांच स्थानों पर चुनाव लंडा, सीपीएम जे डी (एस), बी एस पी (ए) ने एक स्थान पर चुनाव लंडा, सपा ने 7 स्थानों पर चुनाव लंडा। यह कथित है कि बसपा ने राजनीतिक समीकरणों में पार्टी गठबंधन बदल लिया। बसपा ने कल तीनों स्थानों पर चनाव लडकर 136303 मत अर्थात 1.96% मत प्राप्त किए लेकिन उसने एक भी सीट पर विजय नहीं पाई ।करनाल से प्रदीप चौधरी. महेंद्रगढ से रघ यादव की जमानत जब्त हो गई जबकि अंबाला से अमर कमार नागरा ने 12.08% मत हासिल किए। इसकी सहयोगी पार्टी हरियाणा विकास पार्टी ने दो स्थानों फरीदाबाद और भिवानी से चुनाव लडा और हार गई। बहुजन समाज पार्टी का नारा "तिलक तराजू और तलवार इनको मारो जूते" दिलतों को भा गया 11999 के लोकसभा चुनाव में कांग्रेस को 33.6%, भाजपा को 12.08% अन्य को 2.6% मत प्राप्त हुए। अंबाला सीट पर बसपा के परंपरागत प्रत्याशी अमन कुमार नागरा ने चुनाव लडा, कांग्रेस से फूलचंद मुलाना ने, इनेलो भाजपा से रतन लाल कटारिया ने चुनाव लंडा और पिछली बार बसपा ने इनेलों के समर्थन से चुनाव लंडा था और पार्टी प्रत्याशी अमन कुमार नागरा विजय रहे थे लेकिन इस बार पार्टी अकेले चुनाव लंड रही थी इस सीट को बरकरार रखने के लिए अमन कमार ने भरपर कोशिश की। बहजन समाज पार्टी प्रत्याशी अमन कमार नागरा ने कहा कि वे न तो भाजपा को सत्ता तक पहुंचा हुआ देखना चाहते हैं और ना ही कांग्रेस को उभरता हुआ देख सकते हैं। यह कहते हैं कि इसी में बहजन समाज का हित है। भाजपा को सांप्रदायिक तथा कांग्रेस को भ्रष्ट बताते हुए नागरा कहते हैं कि चौटाला शुरू में तो किसान, मजदूर की बात करते हैं लेकिन अंतिम समय में स्वार्थ की राजनीति पर आ जाते हैं। उन्होंने कहा कि पिछले लोकसभा चुनाव में लोक दल व बसपा के बीच में <mark>चुनावी</mark> समझौते के बाद बसपा का वोट बैंक तो आसानी से लोकदल को स्थानांतरित हो गया लेकिन देवीलाल 🛮 चौटाला का वोट बैंक बसपा को नहीं मिला। राज्य भर में बसपा का 7% वोट बैंक होने का दावा करते हुए नागरा ने कहा कि बहुजन समाज पार्टी का कार्यकर्ता अनुशासित है व चौटाला के पास केवल टिकटार्थीयों की ही भीड़ है। बहुत प्रचार प्रसार के पश्चात भी बहुजन समाज पार्टी को अंबाला चुनाव क्षेत्र से हार मिली। बसपा की हार के विषय में अमन कुमार नागरा ने कहा कि लोकसभा चुनाव में बहुजन समाज पार्टी के प्रत्याशियों पर पूर्व मुख्यमंत्री बंसीलाल के विरुद्ध जनता के गुस्से का नजला गिरा है। भाजपा, इनेलो तथा कांग्रेस प्रत्याशियों ने दलित मतदाताओं को गुमराह किया इन पार्टियों ने धन के बल पर दलित मतदाताओं को खरीदा और हमारा वोट बैंक कच्चे लालच में आ गया। करनाल से बहुजन समाज पार्टी के प्रत्याशी प्रदीप चौधरी ने चुनाव लड़ा तथा चुनाव हार गए। महेंद्रगढ से बहुजन समाज पार्टी के प्रत्याशी रघू यादव ने चुनाव लड़ा इनको भी हार का सामना करना पड़ा । ऐसी परिस्थितियों में पार्टी विशेष की तरफ राजनीतिक सहभागिता बढ़ाने की अपेक्षा मुख्य मुद्दों पर तथा राष्ट्रीय राजनीतिक गतिविधियों पर अधिक सम्मान नजर आया। बसपा को इन सभी राजनीतिक समीकरणों और राजनीतिक अभिमखीकरण के प्रभाव के फलस्वरुप 1998 की अपेक्षा 1999 में मतदाता प्रतिशत सहभागिता की कमी का झटका सहना पडा।

<u>स्थान</u>	<u>निर्वाचन</u> <u>क्षेत्र</u>	<u>उम्मीदवार</u>	<u>मतदाताओं</u> <u>की संख्या</u>	<u>डाले गए</u> <u>मतों की</u> संख्या	<u>मतदान</u> <u>प्रतिशत</u>	बहुजन समाज पार्टी	बहुजन समाज पार्टी को प्राप्त मत प्रातिशत
3	अंबाला	अमन कुमार नागरा	10,91,846	6,98,854	64.0%	83,644	12.1%

3	करनाल	प्रदीप कुमार	11,31,448	7,71,194	68.2%	26,860	3.5%
3	महेंद्रगढ़	रघु	12,36,918	7,52,654	60.9%	25,826	3.5%

हरियाणा लोकसभा चुनाव 2004

चुनाव आयोग ने 2004 के लोकसभा चुनाव की घोषणा चार चरणों में 20 व 26 अप्रैल तथा 5 मई व 10 मई को घोषणा की। यह पहला आम चुनाव होगा जिसमें पूरा मतदान ईवीएम अर्थात इलेक्ट्रॉनिक वोटिंग मशीन से होगा और चुनाव में लगभग 67. 5करोड़ मतदाताओं ने भाग लिया। मुख्य चुनाव आयुक्त टी एस कृष्णमूर्ति ने बताया कि आंध्र प्रदेश को छोड़कर पूरे देश में मतगणना 13 मई को होगी। 1999 के लोकसभा चुनाव में बहुजन समाज पार्टी को मिली निराशाजनक हार का सामना करते हुए पार्टी अपने सबसे निचले स्तर पर पहुंच गई जिसके कारण पार्टी ने संगठनात्मक फेरबदल किया और प्रदेश अध्यक्ष अमन कुमार नागरा को पार्टी से निष्कासित कर दिया।पार्टी राष्ट्रीय अध्यक्ष कुमारी मायावती ने 2004 का लोकसभा चुनाव अकेले लड़ने का निश्चय किया। चुनाव से पूर्व बसपा सुप्रीमो मायावती ने रोहतक में रैली कर प्रदेश के राजनीतिक माहौल को गरमा दिया, बुधवार को छोटूराम स्टेडियम में मायावती ने कांग्रेस, भाजपा व मुख्यमंत्री चौटाला को जमकर कोसा। बहुजन समाज पार्टी सुप्रीमो ने गठबंधन का फैसला फिलहाल टाल दिया।उन्होंने दावा किया कि 14वी लोकसभा में वैतेस ऑफ पावर (Balance of Power) बहुजन समाज पार्टी होगी। बसपा के सहयोग और समर्थन के बिना केंद्र की सरकार बननी मुश्किल होगी।

बहुजन समाज पार्टी का नारा

चंद गुंडन की छाती पर बटन दबेगा हाथी पर जिसकी जितनी संख्या भारी उसकी उतनी भागीदारी तिलक तराजू और तलवार इनको मारो जूते चार जाती पर ना पाती पर मोहर लगेगी हाथी पर तख्त बदल दो ताज बदल दो बेईमानों का राज बदल दो

अकेले अपने बलबूते पर देश भर में 325 सीटों पर लोकसभा चुनाव लड़ने की घोषणा करते हुए बहुजन समाज पार्टी ने हिरयाणा में अंबाला से चंद्रपाल ,करनाल से डॉक्टर अशोक कश्यप, भिवानी से रामानंद जांगड़ा ,सिरसा से डॉक्टर रमेश मुगल, हिसार से संत रामप्रकाश, रोहतक से लोकेंद्र सिंह, सोनीपत से शगुन गुप्ता, कुरुक्षेत्र से बलवान सिंह की घोषणा की। काशीराम की अनुपस्थिति में पहली बार अपनी ताकत का एहसास कराने के लिए चुनाव मैदान में जद्दोजहद कर रही बसपा के लिए खोने को कुछ भी नहीं लेकिन दिलतों का पारिवारिक वोट समेट कर दूसरे पार्टियों के समीकरण को बना व बिगाड़ सकने की ताकत थी। बसपा के पक्ष में मायावती का नेतृत्व, काशीराम की छिव, जातिगत वोट का फायदा जैसे तत्व थे जबिक एकल व्यक्ति वाली पार्टी, संगठन का कमजोर होना, सिक्रयता का अभाव और गठबंधन पर आश्रित पार्टियों का अस्तित्व जैसे विपक्षी तक भी मौजूद थे। 10 मई 2004 को पूरे हिरयाणा में लोकसभा के सदस्यों के लिए मतदान सुबह 8:00 से लेकर शाम 5:00 बजे तक संपन्न हुआ।

स्थान	निर्वाचन <u>क्षेत्र</u>	उम्मीदवार	मतदाताओं की संख्या	डाले गए मतों की संख्या	<u>मतदा</u> <u>न</u> <u>प्रतिश</u> त	बहुजन समाज पार्टी	बहुजन समाज पार्टी को प्राप्त मत प्रतिशत
4	अंबाला	चंद्रपाल	11,99,338	8,47,673	70.7%	57,028	6.7%
4	फरीदाबाद	हाजी अब्दुल मलिक	15,46,578	8,44,647	54.6%	71,459	8.5%

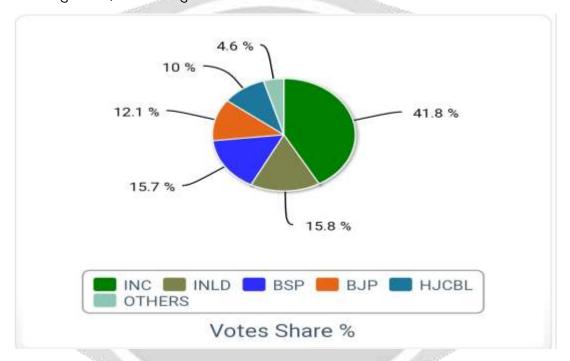
4	हिसार	संत	11,36,762	7,69,679	67.7%	25,060	3.3%
		रामप्रकाश					
4	रोहतक	गीता	10,55,610	6,61,641	62.7%	24,228	3.7%
4	सोनीपत	शगुन गुप्ता	11,38,771	7,36,510	64.7%	37,185	5.0%
5	भिवानी	रामानंद	11,92,271	8,70,670	73.46	17,216	2.0%
					%		
5	करनाल	अशोक	12,40,344	8,18,605	66.0%	67,392	8.2%
		कुमार कश्यप					
5	महेंद्रगढ़	रोहतास	14,29,015	8,48,852	59.4%	56,181	6.6%
5	सिरसा	डॉ रमेश	12,19,935	8,41,638	69.0%	24,448	2.9%
		भुक्कल	All managements				
6	कुरुक्षेत्र	मोना राम	11,61,933	8,50,680	73.2%	23,057	2.7%

66.32%मतदाताओं ने प्रदान किया। भिवानी लोकसभा क्षेत्र में सबसे अधिक मतदान 73.46% हुआ जबिक फरीदाबाद लोकसभा चुनाव क्षेत्र में सबसे कम 54.6% मतदान हुआ। अंबाला में 13 साल बाद ऐसा हो रहा है जब किसी का किसी के साथ गठजोड़ नहीं था मैदान में भाज<mark>पा ,कांग्रेस</mark> के अलावा बहजन समाज पार्टी, इनेलो, हविपा, एकता शक्ति पार्टी,हरियाणा अकाली दल, रालोद एवं समता पार्टी ने भी ताल ठोक दी थी। अंबाला अनुसूचित जाति के लिए सुरक्षित है। हरियाणा में बहुजन समाज पार्टी की जड़े जमाने वाले अमन कुमार नागरा को निष्ठा निष्कासित कर दिया गया फिर अशोक शेरवाल बहुजन समाज पार्टी छोड़ कर चले गए हरियाणा में बहुजन समाज पार्टी के एकमात्र विधायक बिशनलाल सैनी ने भी इंडियन नेशनल लोक दल का दामन थाम लिया था। हालांकि पार्टी नेताओं का मानना है कि पार्टी छोड़ने वाले अकेले गए हैं। बहुजन समाज पार्टी का वोटर नीले झंड़े का हाथी निशान से जुड़ा हुआ है किसी नेता से नहीं। 2004 के चुनाव में बहुजन समाज पार्टी 6.73% वोट लेकर चौथे स्थान पर रहे। अंबाला से चंद्रपाल करुक्षेत्र से मोना राम कश्यप, करनाल से अशोक कश्यप ,सोनीपत से शगन गप्ता, रोहतक से गीता ग्रेवाल, फरीदाबाद से अब्दल मलिक, महेंद्रगढ से रोहतास खटाना, भिवानी से रामानंद जांगडा ,हिसार से संत रामप्रकाश, सिरसा से डॉक्टर रमेश शुक्ला बहुजन समाज पार्टी के प्रत्याशी रहे तथा बहुजन समाज पार्टी को किसी भी लोकसभा चुनाव क्षेत्र में जीत हासिल नहीं हुई। बहुजन समाज पार्टी की करारी हार के कारण अमन कुमार नागरा की नकारात्मक भिमका, नवीन सदस्यता, बलवान सिंह के नेतत्व की कमी, केंद्रीय नेता के प्रभाव की कमी ,पार्टी के मध्य आपसी दलित संघर्ष, अशोक शेरवाल का पार्टी छोड़ना ,जमीनी संपर्क का अभाव ,कांग्रेस पार्टी की लहर राज्य स्तर पर नेतत्व का अभाव आदि मुख्य तत्व रहे। इसके अतिरिक्त दलित समाज ने अपनी सुरक्षा कवच के रूप में कांग्रेस को देखा तथा उसे प्रतिनिधित्व दिया। यह भी कथित है कि बिना गठबंधन चनाव में खड़े रहना कठिन प्रतीत हुआ इसके बावजद बहजन समाज पार्टी अपना जनाधार बनाए हुए हैं एवं राष्ट्रीय पार्टी के रूप में समस्त राजनीतिक समीकरणों में सक्रिय भूमिका निभा रही हैं।

हरियाणा लोकसभा चुनाव 2009:

2009 के लोकसभा चुनाव में हरियाणा में कुल 38 राजनीतिक दलों ने हिस्सा लिया जिसमें मतदाताओं की संख्या 1,20,87,710 थी जिसमें कुल 81,56,829,मत डाले गए जिसमें वैध मतों की संख्या 81,54,018थी। कुल मतदान 67.5% रहा। 13वी लोकसभा का कार्यकाल 2004 में पूरा होने के पश्चात तत्कालीन केंद्रीय स्तर पर स्थापित यूपीए गठबंधन की सरकार ने 2009 में चोदहवी लोकसभा के चुनाव की घोषणा की।2005 में केंद्रीय स्तर पर स्थापित यूपीए सरकार ने सूचना का अधिकार, उसके पश्चात् शिक्षा का अधिकार तथा साथ ही साथ मनरेगा के तहत गरीबों के कल्याण के लिए कार्य किए। हरियाणा में भी कांग्रेस सरकार के अंतर्गत मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र सिंह हुड्डा के विकास कार्यों से लोग काफी खुश थे इसीलिए 2009 के लोकसभा चुनाव की लहर कांग्रेस के पक्ष में नजर आ रही थी। इस

दौरान चौधरी भजन लाल ने कांग्रेस पार्टी को छोड़कर हिरयाणा जनिहत कांग्रेस का निर्माण किया जिससे हिरयाणा में एक नए राजनीतिक दल का जन्म हुआ किस राजनीतिक दल से कांग्रेस को ज्यादा नुकसान नहीं हुआ। ।दिलतों और अनुसूचित जाित जनजाित का समर्थन भी कांग्रेस को ही प्राप्त था जिसके परिणाम स्वरूप हिरयाणा में 2009 के लोकसभा चुनाव में कांग्रेस ने 9 सीटों पर विजय के साथ 41.8% मत हािसल किए। अंबाला सुरिक्षत सीट से कुमारी शैलजा, कुरुक्षेत्र से नवीन जिंदल,सिरसा से अशोक, करनाल से अरिवंद कुमार शर्मा, सोनीपत से जितेंद्र सिंह, रोहतक से दीपेंद्र सिंह, भिवानी-महेंद्रगढ़ से श्रुति चौधरी, गुडगांव से इंदरजीत सिंह, फरीदाबाद से अवतार सिंह भड़ाना, ने जीत दर्ज की। हिरयाणा जनिहत कांग्रेस ने 10 %मत हािसल कर के हिसार से भजन लाल की जीत दर्ज की। उपरोक्त विवरण से स्पष्ट है कि बहुजन समाज पार्टी ने अंबाला से चंद्रपाल, फरीदाबाद से चेतन शर्मा, ,कुरुक्षेत्र से गुरुदयाल सैनी, रोहतक से राजकुमार, सिरसा से राजेश कुमार, सोनीपत से देवराज दीवान, करनाल से विरेंद्र सिंह, गुरुग्राम से जािकर हुसैन, भिवानी महेंद्रगढ़ से विक्रम सिंह तथा हिसार से दयाल सिंह को चुनाव मैदान में उतारा। चौदहवीं लोकसभा चुनाव में हिरयाणा में बहुजन समाज पार्टी ने 10 लोकसभा सीटों में से



स्थान	<u>निर्वाचन</u> क्षेत्र	उम्मीदवार	<u>मतदाताओं</u> की संख्या	<u>डाले गए</u> मतों की	<u>मतदान</u> प्रतिशत	बहुजन समाज	<u>बहुजन समाज</u> पार्टी को प्राप्त
			100	<u>संख्या</u>		<u>पार्टी</u>	<u>मत प्रतिशत</u>
4	अंबाला	चंद्रपाल	12,64,907	8,66,507	68.5%	1,88,608	21.8%
4	फरीदाबाद	चेतन शर्मा	11,03,046	6,24,896	56.7%	1,13,453	18.2%
4	कुरुक्षेत्र	गुरदयाल सिंह सैनी	11,66,684	8,75,415	75.0%	1,51,231	17.3%
4	रोहतक	राजकुमार	12,74,972	8,35,610	65.5%	68,210	8.2%
4	सिरसा	राजेश कुमार	13,09,507	9,81,472	75.0%	76,010	7.8%
5	सोनीपत	देवराज दीवान	10,99,978	7,12,449	64.8%	1,12,837	15.8%

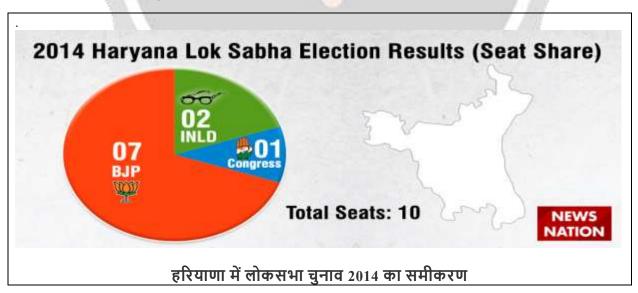
5	गुरुग्राम	जाकिर	12,44,437	7,56,205	60.8%	1,93,652	25.6%
		<i>हुसैन</i>					
5	करनाल	वीरेंद्र वर्मा	12,16,977	8,11,067	66.7%	2,28,352	28.2%
5	भिवानी	विक्रम सिंह	12,12,513	8,64,504	71.3%	61,437	7.1%
	महेंद्रगढ़						
6	हिसार	राम दयाल	11,94,689	8,28,704	69.4%	90,277	10.9%
		सिंह					

एक भी स्थान पर जीत हासिल नहीं थी तथा 15.7% मत हासिल करके तीसरे स्थान पर रही। फिर भी बहुजन समाज पार्टी हरियाणा में अपना जनाधार बनाए हुए हैं एवं राष्ट्रीय पार्टी के रूप में समस्त राजनीतिक समीकरणों में सक्रिय भूमिका निभाती है

हरियाणा लोकसभा चुनाव 2014

हरियाणा मैं लोकसभा चुनाव 10 अप्रैल 2014 को हुए। इस लोकसभा चुनाव में हरियाणा में कुल 48 राजनीतिक दलों ने भागीदारी निभाई जिसमें कुल मतदाताओं की संख्या1,60,97,749 थी जिसमें 1,14,95,150 वोट डाले गए जिसमें वैध मतों की संख्या 1,14,60,925 रही तथा मतदान 71.4% हुआ। पंद्रहवीं लोकसभा चुनाव हरियाणा में हरियाणा जनहित कांग्रेस पार्टी जिसका नेतृत्व कुलदीप बिश्नोई जी कर रहे थे ने बीजेपी के साथ गठबंधन करके लड़ा। जिसके परिणाम स्वरूप बीजेपी ने हरियाणा की 10 लोकसभा सीटों में से 7 सीटों पर जीत हासिल की,कांग्रेस ने केवल एक सीट पर विजय हासिल की तथा इंडियन नेशनल लोकदल ने 2 सीटों पर विजय हासिल की। बीजेपी को 39,93,527 वोट मिले, जो कुल वोटों का 34.84% प्रतिशत था. जबिक कांग्रेस 22.99 प्रतिशत वोटों के साथ राज्य में 26,34,905 वोट हासिल करने में सफल रही थी. INLD को 24.43 फीसदी वोट शेयर के साथ 27,99,899 वोट मिले. बीजेपी की सहयोगी हरियाणा जनहित कांग्रेस ने सीट साझा समझौते के अनुसार 2 सीटों पर चुनाव लड़ा और उसे 7,03,698 वोट (6.14 प्रतिशत) मिले. हालांकि, पार्टी ने चुनावों में उसके प्रमुख कुलदीप बिश्नोई अपनी ही सीट से चुनाव हार गए.

हरियाणा में लोकसभा चुनाव 2014 का समीकरण



हरियाणा में लोकसभा चुनाव 2014 में बीएसपी (BSP) ने भी चुनाव लड़ा. बीएसपी को हरियाणा में लोकसभा चुनाव में 4.60 फीसदी वोट मिले थे. बीजेपी ने अंबाला, करनाल, सोनीपत ,भिवानी-महेंद्रगढ़ ,

कुरुक्षेत्र, गुड़गांव और फरीदाबाद सीट अपने नाम किए. तो वहीं कांग्रेस ने रोहतक में अपना दबदबा बरकरार रखा, जबिक इनेलो ने सिरसा और हिसार लोकसभा सीटों पर जीत हासिल की. 2014 लोकसभा चुनाव में जीत हासिल करने वाले बड़े चेहरों में राव इंद्रजीत सिंह (बीजेपी-गुड़गांव), कृष्ण पाल गुर्जर (बीजेपी-फरीदाबाद), अश्विनी कुमार चोपड़ा(बीजेपी-करनाल), दीपेंद्र सिंह हुड्डा (कांग्रेस-रोहतक) और दुष्यंत चौटाला (आईएनएलडी-हिसार) शामिल थे. तो वहीं दूसरी ओर कुलदीप बिश्नोई हिरयाणा जनहित कांग्रेस, नवीन जिंदल (कांग्रेस), अशोक तंवर (कांग्रेस), अवतार सिंह भड़ाना (कांग्रेस), श्रुति चौधरी (कांग्रेस), ओम प्रकाश धनखड़ (बीजेपी), आर. के. आनंद (इंडियन नेशनल लोकदल) जािकर हुसैन (इंडियन नेशनल लोकदल), योगेंद्र यादव (आम आदमी पार्टी), नवीन जयहिंद(आम आदमी पार्टी) और अरविंद कुमार शर्मा (कांग्रेस) जैसे दिग्गज और बड़े चेहरे चुनाव हार गए थे.

<u>स्थान</u>	<u>निर्वाचन</u> <u>क्षेत्र</u>	<u>उम्मीदवार</u>	<u>मतदाताओं</u> की संख्या	<u>डाले गए</u> मतों की संख्या	<u>मतदान</u> प्रतिशत	बहुजन समाज पार्टी	बहुजन समाज पार्टी को प्राप्त मत प्रतिशत
4	अंबाला	कपूर सिंह	16,92,227	12,18,995	72.0%	1,02,627	8.5%
4	भिवानी महेंद्रगढ़	वेदपाल तंवर	14,73,912	10,30,431	69.9%	27,834	2.7%
4	हिसार	मांगेराम	15,17,606	11,55,914	76.2%	30,446	2.6%
4	करनाल	वीरेंद्र वर्मा	16,84,321	11,93,500	70.9%	1,02,628	8.6%
4	कुरुक्षेत्र	छतर सिंह	14,9 <mark>8,459</mark>	<i>11,35</i> ,892	75.8%	68,926	6.1%
5	फरीदाबाद	राजेंद्र शर्मा	17,40,352	11,30,726	65.0%	66,000	5.9%
5	गुरुग्राम	धर्मपाल	18,45,623	13,20,619	71.6%	65,009	4.9%
5	रोहतक	मनोज कुमार	15,67,504	10,44,331	66.6%	18,690	1.8%
5	सिरसा	मांगेराम	16,60,557	12,79,105	77.0%	20,750	1.6%
5	सोनीपत	सुमन सिंह	14,17,188	9,85,637	69.6%	24,103	2.5%

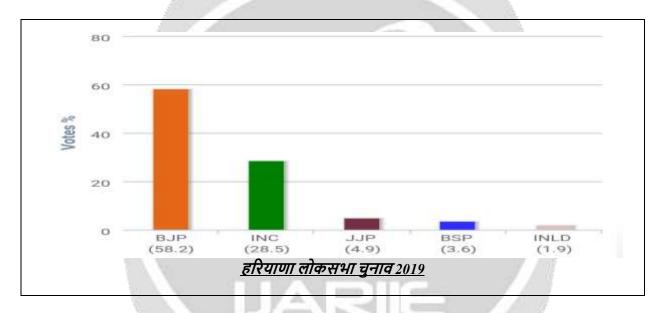
उपरोक्त विवरण से स्पष्ट है कि बहुजन समाज पार्टी ने अंबाला से कपूर सिंह, भिवानी महेंद्रगढ़ से वेदपाल तंवर, हिसार से मांगेराम, करनाल से वीरेंद्र वर्मा, कुरुक्षेत्र से छतर सिंह, फरीदाबाद से राजेंद्र शर्मा, गुरुग्राम से, रोहतक से मनोज कुमार, सिरसा से मांगेराम, सोनीपत से सुमन सिंह को चुनाव मैदान में उतारा जिन्होंने कुल मतों का 4.6% मत हासिल किया। इस प्रकार बहुजन समाज पार्टी वोट प्रतिशत में हरियाणा लोकसभा चुनाव में पांचवें स्थान पर रही हरियाणा में नए बने राजनीतिक दलों जैसे इंडियन नेशनल लोकदल, हरियाणा जनहित कांग्रेस के परिणाम स्वरूप बहुजन समाज पार्टी के वोट बैंक में सेंध लगी और बहुजन समाज पार्टी का वोट बैंक गिरता चला गया और बहुजन समाज पार्टी को करारी हार का सामना करना पड़ा। मोदी लहर का सबसे ज्यादा फायदा बीजेपी पार्टी को हुआ तथा मनोहर लाल खट्टर ने हरियाणा के मुख्यमंत्री के रूप में शपथ ली।

हरियाणा लोकसभा चुनाव 2019

हरियाणा लोकसभा चुनाव 2019 में कुल 50 राजनीतिक दलों ने हिस्सा लिया जिसमें मतदाता सूची में 1,70,72,366 मतदाताओं के नाम दर्ज थे जिसमें से 1,26,81,536 मतदाताओं ने वोट डाले जिसमें कुल वैध मतों की संख्या 1,26,39,755 थी तथा कुल मतदान प्रतिशत 74.3% रहा। मुख्य चुनाव अधिकारी डॉ इंद्रजीत ने हरियाणा में 2019 के लोकसभा चुनाव की घोषणा 12 मई को करवाने की की तथा 20 मई को मतगणना के आदेश दिए हरियाणा में 2019 के लोकसभा चुनाव में 70 पॉइंट 30% लोगों ने मतदान किया राज्य में हुए लोकसभा चुनाव के इतिहास में यह पांचवीं

बार था जब मतदान 70% के आंकड़े को पार कर पाया। 2014 के लोकसभा चुनाव के पश्चात हरियाणा में सत्ता पर काबिज भारतीय जनता पार्टी ने 2019 के हरियाणा लोकसभा चुनाव में लोकसभा की 10 सीटों में से सभी 10 सीटों पर कब्जा करते हुए पहली बार शानदार प्रदर्शन किया। भाजपा का हरियाणा में यह सर्वश्रेष्ठ रहा हरियाणा का एक अलग राज्य के रूप में निर्माण 1 नवंबर 1966 को हुआ था जिसके पश्चात सत्ता के निर्माण में कांग्रेस पार्टी का एक महत्वपूर्ण योगदान रहा कांग्रेस को 20 साल के अंतराल के बाद ऐसी करारी हार का सामना करना पड़ा हरियाणा में मतदान के लिए 19433 मतदान केंद्र बनाए गए जिसमें से 5502 शहरी तथा तेरा 931 ग्रामीण क्षेत्रों में स्थापित किए गए थे प्रदेश के कुल मतदाताओं में स्थान में लाख 16 हजार 516 पुरुष मतदाता 8340173 महिला मतदाता तथा 207 ट्रांसजेंडर मतदाता थे इसमें 105859 सर्विस मतदाता तथा 104534 दिव्यांग मतदाता भी शामिल थे। हरियाणा में फरवरी 2016 में जाटों के द्वारा आरक्षण प्राप्त करने के लिए आंदोलन चलाया गया था जिसमें अचानक हिंसा हो जाने के बाद प्रदेश के कुछ जिलों में खासकर ऐसे जिलों में जहां पर जाटों की संख्या ज्यादा थी, बहुत बड़े पैमाने पर आगजनी व लूटपाट की घटनाएं हुई जिसकी वजह से बहुत बड़ी संख्या में सरकारी और निजी संपत्ति को नुकसान हुआ। हरियाणा प्रदेश को करोड़ों का नुकसान झेलना पड़ा था और तकरीबन लगभग 32 लोग आंदोलन की भेंट चढ़ गए थे हिंसा और आगजनी के लिए जाट समुदाय के लोगों को <mark>जिम्मेदार ठहराया</mark> गया था और तत्कालीन मुख्यमंत्री मनोहर लाल खट्टर की सरकार के कई मंत्रियों ने तो बार-बार पूर्व मुख्यमंत्री वह कांग्रेस के दिग्गज नेता भूपेंद्र सिंह हुड्डा को इस सब के लिए दोषी ठहराया था। हरियाणा के 2019 के लोकसभा चुनाव में रोहतक से बीजेपी उम्मीदवार अरविंद शर्मा और सोनीपत से बीजेपी उम्मीदवार रमेश कौशिक इसी मुद्दे पर जनता से वोट मांग रहे थे दोनों सीटों पर कांग्रेस पार्टी से पिता-पुत्र अर्थात सोनीपत से भूपेंद्र सिंह हुड्डा और रोहतक से दीपेंद्र हुड्डा खडे हुए थे। लोकसभा चुनाव में तत्कालीन मुख्यमंत्री मनोहर लाल खट्टर प्रचार प्रसार करते हुए कहा कि आरक्षण आंदोलन के दौरान प्रदेश को आग के हवाले करने वालों के खिलाफ बीजेपी को वोट दीजिए वह हरियाणा में सुख शांति और समृद्धि की नई मिसाल कायम करेगी। जिसके परिणाम स्वरूप हरियाणा की जनता ने दिल खोलकर भारतीय जनता पार्टी को वोट दिए और कांग्रेस के तमाम बड़े नेता जैसे कुमारी शैलजा, प्रदेश अध्यक्ष अशोक तवर ,पूर्व मंत्री कैप्टन अजय यादव ,चौधरी निर्मल सिंह ,पूर्व स्पीकर कुलदीप शर्मा ,कुलदीप बिश्नोई के बेटे भव्य बिश्नोई, कांग्रेस विधायक दल की नेता किरण चौधरी की बेटी श्रुति चौधरी और पूर्व सांसद अवतार सिंह भड़ाना हार गए। इंडियन नेशनल लोकदल के नेता अभय चौटाला के बेटे अर्जुन चौटाला समेत पार्टी के सभी उम्मीदवारों की जमानत जप्त हो गई। जननायक जनता पार्टी के हिसार से निवर्तमान सांसद दुष्यंत चौटाला भी चुनाव हार गए जनता जन नायक पार्टी और आम आदमी पार्टी गठबंधन में दुष्यंत एकमात्र ऐसे नेता थे जिनकी जमानत बच पाई थी। दुष्यंत चौटाला ने अपनी हार स्वीकार करते हुए ट्रीट कर लिखा

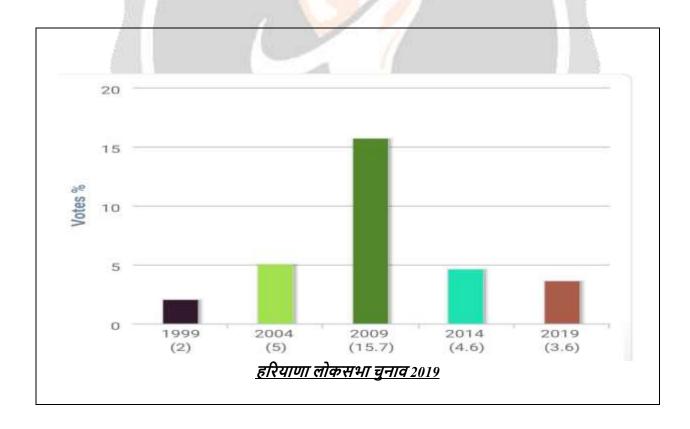
जनमत स्वीकार, हार स्वीकार, संघर्ष के लिए हम फिर तैयार. चलते रहेंगे हौसलों के साथ, दिल में लेकर ताऊ के विचार। हरियाणा के 2019 के लोकसभा चुनाव में अंबाला से रतन लाल कटारिया ,कुरुक्षेत्र से नायब सिंह सैनी, से सुनीता दुग्गल, हिसार से बृजेंद्र सिंह ,करनाल से संजय भाटिया, सोनीपत से रमेश चंद्र कौशिक, रोहतक से अरिवंद शर्मा ,भिवानी महेंद्रगढ़ से धर्मवीर सिंह ,गुरुग्राम से राव इंद्रजीत सिंह, फरीदाबाद से कृष्ण पाल गुर्जर विजय रहे. यह सभी भाजपा पार्टी के उम्मीदवार थे। पार्टी का मानना है कि मनोहर लाल की नीतियों और भ्रष्टाचार रहित सरकार के नारे पर जनता ने मुहर लगाई। धरती, भरती और बदली के दाग धोने के कारण ही हरियाणा की जनता न भाजपा को सभी दस सीटों पर जीत दी है। अमित शाह ने बीजेपी की जीत पर कहा- यह परिणाम विपक्ष द्वारा किये गये दुष्प्रचार, झूठ, व्यक्तिगत आक्षेप और आधारहीन राजनीति के विरुद्ध भारत का जनादेश है।आज का जनादेश यह भी दिखाता है कि भारत की जनता ने देश से जातिवाद, परिवारवाद और तुष्टिकरण को पूरी तरह से उखाड़ फेंककर विकासवाद और राष्ट्रवाद को चुना है। हमने हरियाणा एक-हरियाणवी एक के सिद्धांत पर चलते हुए जनता के हित में सरकार चलाई। भ्रष्टाचार के तमाम छिद्र बंद किए। मुख्यमंत्री का स्वैच्छिक कोटा बंद कर भ्रष्टाचार की गुंजाइश ही खत्म कर दी। अब कर्मचारियों और लोगों को तबादले-पोस्टिंग के लिए मंत्रियों-विधायकों और मुख्यमंत्री के चक्कर लगाने की जरूरत नहीं होती। सब कुछ पारदर्शी तरीके से ऑनलाइन होता है। लोग इस बदलाव को समझ रहे हैं। हमें इन्हीं कामों का आशीर्वाद मिला है।



<u>स्थान</u>	<u>निर्वाचन</u> <u>क्षेत्र</u>	उम्मीदवार	मतदाताओं की संख्या	डाले गए मतों की संख्या	<u>मतदान</u> <u>प्रतिशत</u>	बहुजन समाज <u>पार्टी</u>	बहुजन समाज पार्टी को प्राप्त मत प्रतिशत
3	अंबाला	नरेश कुमार	17,57,524	13,16,23 5	75.3%	96,296	7.4%
3	फरीदाबाद	मनधीर मान	19,26,323	13,27,29 5	69.2%	86,752	6.6%
3	गुरुग्राम	रईस अहमद	19,90,711	14,46,50	72.9%	26,756	1.9%

				9			
3	करनाल	पंकज	18,21,231	13,00,72	71.7%	67,183	5.2%
				2			
3	कुरुक्षेत्र	शशि	15,79,115	12,30,20	78.1%	75,625	6.2%
)			2			
3	रोहतक	किशन लाल	16,38,605	12,20,57	74.7%	38,364	3.2%
		पांचाल		1			
4	हिसार	सुरेंद्र शर्मा	15,58,281	11,79,86	75.9%	45,190	3.8%
	•	3 1		9			
5	सिरसा	जनक राज	17,40,188	13,69,48	79.0%	25,107	1.8%
		अटवाल	and the second	6			

निष्कर्ष- उपरोक्त विवरण से स्पष्ट है कि इन बहुजन समाज पार्टी ने अंबाला से नरेश कुमार को जिसने कुल मतदान का 7.4 प्रतिशत मत हासिल किया फरीदाबाद से मंधिर मान को जिसने 6.56 प्रतिशत मत हासिल किया, गुरुग्राम से रईस अहमद ने 1.2 प्रतिशत मत हासिल किया ,करनाल से पंकज जिसने 5.2, कुरुक्षेत्र से शिश जिसने 6.2 प्रतिशत रोहतक से किशनलाल पांचाल जिसने3.2%, हिसार से सुरेंद्र शर्मा जिसने 3.8%, सिरसा से जनक राज अटवाल जिसने 1.8% मत हासिल किया। इस प्रकार बहुजन समाज पार्टी कुल वैध मतों का 3.6 प्रतिशत हासिल करके हरियाणा लोकसभा चुनाव में चौथे नंबर पर रहीं।



इस प्रकार हम देखते हैं कि हरियाणा लोकसभा चुनाव में बहुजन समाज पार्टी ने 1999 में जहां 2% मत हासिल किया वहीं 2004 में 5% 2009 में 15.7 7% 2014 में 4:00 5% तथा 2019 में 3:00 5% मत हासिल किये।

बहुजन समाज पार्टी का लक्ष्य बहुजन जिसमें अन्य पिछड़ा वर्ग अनुसार अनुसूचित जाित जनजाित और अल्पसंख्यक शािमल है उनको समाज में उचित स्थान दिलाना है पार्टी की विचारधारा भीमराव अंबेडकर के मानवतावादी दर्शन के साथ ही बौद्ध दर्शन से भी प्रेरित है बहुजन समाज के विचार में दिलत अन्य पिछड़ी जाितयों आदिवािसयों का नया चुनावी समीकरण नहीं था जिसके साथ यथासंभव मुसलमानों का समर्थन भी जुड़ा हुआ था। इसके इलावा बहुजन समाज पार्टी को सामाजिक राजनीितक परिवर्तन के रूप में देखा गया था जिस परिवर्तन के लिए अंबेडकर बाद से काफी कुछ उधार लेकर एक व्यवस्थित एजेंडा तैयार किया गया था लेकिन वर्तमान समय में हरियाणा में बहुजन समाजवादी पार्टी का जनाधार लगातार गिरता जा रहा है इसके पीछे जो अहम बात है वह कि स्वर्ण समुदाय के साथ बसपा ने राजनीितक गठजोड़ करके दिलत ओबीसी की वैचारिक शक्तियों और मतदाताओं के बीच अपनी साख कमजोर कर ली है।

सन्दर्भ-

- "हरियाणा में दसवीं लोकसभा के चुनाव" संजीव कक्कड़, पूर्व शोध प्रबंध, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय ,कुरुक्षेत्र, जून 1993
- 2. हरियाणा गवर्नमेंट इलेक्शन रिकॉर्ड, मुख्य चुनाव कार्यालय, चंडीगढ़
- 3. www.eci.giv.in
- 4. भारत की राजनीतिक व्यवस्था, एस.एम सैयद, भारत बुक सेंटर, आईएसबीएन 9788176781213-2016
- 5. डेमोक्रेसी पॉलिटिक्स एंड गवर्नेंस ए सूर्य प्रका<mark>श प्रभात</mark> प्रकाशन आईएसबीएन 13:9789355211682-2021
- 6. भारतीय शासन एवं राजनीति प्रोफेस<mark>र बीएल पडिया</mark> डॉक्टर कुलदीप पडिया साहित्य साइट्स सी भवन 17 1985
- 7. काशीराम लीडर ऑफ दलित बद्रीनारा<mark>यण, 2018</mark>
- 8. बहुजन समाज और उसकी राजनीति, कुमारी मायावती, मायावती पब्लिशर 2001
- 9. काशीराम और बहुजन समाज-शंका और समाधान , डॉक्टर रामनाथ पूर्व कुलपति
- 10. https://m.bhaskarhindi.com/politics/news/kanshi-rams-death-anniversary-today-bsp-will-make-election-conch-shell-300973
- 11. https://www.jagran.com/elections/lok-sabha-bsp-is-the-third-largest-party-in-vote-share-jagran-special-19098373.html अतीत के आईने से: वोट शेयर के मामले में तीसरी सबसे बड़ी पार्टी है बसपा
- 12. बसपा की कहानी मान्यवर कांशीराम की जुबानी, फॉरवर्ड प्रेस नवल किशोर कुमार 15 जुलाई 2018
- 13. बामसेफ एक परिचय- काशीराम, गौतम बुक सेंटर, 2019
- 14. केके गुप्ता, भारतीय सरकार एवं राजनीति, लक्ष्मी बुक डिपो, 2021
- 15. राजनीतिक दल पार्टी घोषणापत्र और भारत में चुनाव 1909-2014 आर के तिवारी ISBN 9780367733339 रूटलेज इंडिया द्वारा 18 दिसंबर, 2020